IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री जीवन का कटु सत्य- 'तिरियाचरित्तर'

शोधार्थी का नाम- प्रिया अशोक कुमार अग्निहोत्री
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय

समकालीन हिंदी कथाकारों में शिवमूर्ति का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। इनकी कहानियों का मूल स्वर ग्रामीण भारत की कहानी कहता है और इनकी सबसे प्रमुख कहानियों में जो स्वर सबसे अधिक उभरता है वह है स्त्री का स्वर। इनकी प्रमुख कहानियों में 'तिरियाचरित्तर' बहुत ही प्रसिद्ध है परन्तु इस कहानी में स्त्री की संवेदनशीलता को मूर्खता का परिचय बनाकर प्रस्तुत किया गया है। कथाकार ने तिरियाचरित्तर में ग्रामीण मानसिकता को, स्त्री के संघर्ष को जस का तस रख दिया।

शिवमूर्ति की कहानी 'तिरियाचरित्तर' समाज द्वारा प्रतिस्थापित नियमों का घिनौना रूप प्रस्तुत करती है। ऐसा समाज जिसमें पुरुषों को खुलेआम कुछ भी करने की छूट हो सारे गाँव वाले पुरुषों के कुकृत्यों को जानते हुए भी चुप रहते हैं क्योंकि वे पुरुषों को मन ही मन इसका अधिकार दे चुके हैं जबकि किसी स्त्री के द्वारा किसी से खुलकर बात करने की भी छूट यह समाज नहीं देता। इसे भी स्त्री के चरित्र से जोड़ दिया जाता है। कहानी में कुइसा मिस्त्री, बिल्लर, डरेवर इन सभी की विमली पर नज़र है, यह बात पूरा गाँव जानता है परंतु इससे कहीं भी उनका चरित्र धूमिल नहीं होता जबकि विमली जो भट्टे पर मेहनत-मज़दूरी करके अपना और अपने माता-पिता का पेट पाल रही है, स्वाभिमान के साथ जी रही है; बिल्लर और कुइसा मिस्त्री के मनोभावों को जानते हुए भी उनसे हँसी मज़ाक करते हुए भी एक दूरी बनाकर रखती है और ड्राइवर के प्रति अपने मन में उपजे प्रेम को इसलिए दबाकर रखती है क्योंकि उसका विवाह हो चुका है, भले ही उसने अपने पति को कभी नहीं देखा लेकिन मेले में अपने हाथ पर उसका नाम 'सीताराम' गुदवाकर वह अपने रिश्ते के प्रति पूर्णत: समर्पित दिखती है। इतना ही नहीं बार-बार उसके मन में यही विचार आता है कि उसे अपने पति से छल नहीं करना है। वह अपने शरीर को उसकी अमानत समझकर बचाती आयी है- "कलकत्ते वाले उसके आदमी को क्या पता कि कितने 'जतन' से सँभालकर रखा है विमली ने उसकी अमानत!"[1] इससे यह साबित होता है कि विमली समाज की व्यवस्था के अनुरूप जीवन जीना चाहती है अपने माता-पिता द्वारा उसकी अबोधता में लिए गए विवाह के निर्णय को भी वह स्वीकार करना चाहती है और जब ज़रूरत होती है तब वह बेटी से बेटा बनने से भी पीछे नहीं हटती है- "अपना ही क्यों? सबका पेट पालेगी वह!" भाई भाग गया तो क्या? वह लड़का बनकर रहेगी। नया-नया भट्ठा खुला है गाँव में। काम की अब क्या कमी है?...कौन कहता है कि आदमी-लड़के ही काम कर सकते हैं भट्ठे पर? राँची की मजदूरनें औरतें नहीं है? वे किसी से कम काम करती हैं? तब वह क्यों नही कर सकती? कितनी बार तो बुलाने आ चुका है भट्ठे का मुंशी गाँव की औरतों-लड़कियों को। वह कल से ही भट्ठे पर नाम लिखा

लेगी... जितनी ईंट ढोओ उतना पैसा। ठेके पर।"[2] उस दिन से मेहनत-मज़दूरी करके अपने परिवार की ग़रीबी दूर कर उसने अपनी एक पहचान बनायी है। वह उस समय ख़ान साहब के भट्टे पर काम करने के लिए तैयार हुई थी जब गाँव की कोई महिला इस तरह की मज़दूरी नहीं करती थी। इस तरह वह दूसरी स्त्रियों के लिए भी उदाहरण बनती है और अपने गाँव में स्त्रियों के घर से बाहर निकल कर उन्हें पैसा कमाने और आत्मनिर्भर होने की प्रेरणास्त्रोत भी।

इस तरह विमली सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ आधुनिकता को भी अपनाती है। जिसमें स्त्री कमज़ोर नहीं है, अबला नहीं है, किसी पर आश्रित नहीं है, वह भी बेटों की तरह अपने माता-पिता का सहारा बन सकती है और जिससे मन नहीं मिलता उसके प्रस्ताव को ठुकरा भी सकती है। साधारण-सी दिखने वाली विमली ईमानदारी का प्रतीक बन कर आती है फिर चाहे वह ईमानदारी कार्यक्षेत्र में हो या रिश्तों में। यहाँ कहना गलत नहीं होगा कि महिलाएँ घर-परिवार, रिश्तों के साथ अपने कार्यक्षेत्र में भी पुरुषों के मुकाबले ईमानदार साबित होती हैं। “समय साक्षी है, औरतें कुशल, दक्ष, योग्य और क्षमतावान होने के साथ-साथ अपेक्षाकृत ईमानदार भी सिद्ध होती है।”[3]

ग़लत बातों की अभ्यस्त वह सिर्फ़ इसलिए नहीं होना चाहती कि वह उसके माता- पिता के द्वारा कही जा रही हैं, वह अपना पक्ष स्पष्टत: रखती है। माँ द्वारा बिल्लर की बहन के प्रस्ताव को स्वीकारने पर वह स्पष्ट कहती है कि वह कोई गाय-भैंस नहीं है जिसे वे कुछ पैसों के लालच में किसी से भी बाँध सकते हैं। एक बार उसका विवाह हो चुका है भले ही वह भी उसे बिना पूछे किया गया था परंतु अब वह किसी प्रकार के लालच में अपने रिश्ते का अपमान नहीं करना चाहती है। विमली अपनी माँ के लोभ का उत्तर देते हुए कहती है- "वियाह तूने लड़के से किया था कि पैसे से? मेहनत करेगा आदमी तो एक रोटी कहीं भी मिलेगी। आदमी को अपनी मेहनत पर रीझना चाहिए कि दूसरे के पैसे पर रे?"[4]

भट्टे पर लौंडे-लपाड़ों, मर्दों का आना-जाना लगा रहता है, यह बात जगजाहिर है। ऐसे में विमले के ससुराल में उड़ी अफवाहों से उसका चरित्र संदिग्ध होने लगता है और उसका ससुर बिना बेटे के उसका गौना कराने आ जाता है। विमली जो स्वयं को इस रिश्ते में बँधा मानती आयी है, इसे अपनी नियति समझ कर स्वीकार करती है कि एक दिन उसे अपने माता-पिता का घर छोड़कर ससुराल जाना ही है। अपने गांवों में हँसने-खेलने वाली, चंचल, सभी महिलाओं के लिए मिसाल विमली ससुराल जाकर गुमसुम हो जाती है। बिल्लर और उसके जैसे कई मनचलों को उनकी उद्दंडता का सबक सिखाने वाली विमली ससुर के सामने असहाय हो जाती है।यहाँ भी वह अपने बहू-ससुर के रिश्ते का लिहाज कर जाती है। अपने पति की अमानत मान कर अपने शरीर की अब तक रक्षा करती आयी विमली आरंभ में चुपचाप ससुर का विरोध करती है परंतु यह विरोध कमरे से बाहर नहीं आ पाता। यह सही है कि वह उसके मंसूबों को क़ामयाब नहीं होने देती परंतु वह अपनी इस स्थिति को किसी से नहीं कहती बल्कि मौन धारण कर लेती है। पति और पिता को चिट्ठी अवश्य लिखती है और डरते-डरते एक-एक रात बिताती है। गाँव की महिलाओं को विमली के ससुर पर संदेह होता है परंतु जब वह अपनी बात को मर्दों के सामने रखती हैं तो महिलाओं की बात यह कहकर हवा में उड़ा दी जाती है की औरतों का तो काम ही यही है।

वही ससुर जो होश में रहते हुए विमली के साथ दुराचार करने में नहीं सफल हुआ वह छल से उसे बेहोश कर उसके साथ बलात्कार करता है। यह वही ससुर है जो यह कहकर उसका गौना करा लाया था कि विमली के लक्षण ठीक नहीं हैं, आए दिन उसे तरह-तरह की बातें सुनने को मिलती हैं जिससे उसकी इज़्ज़त कम होती है। यहाँ पुरुषवादी समाज में महिलाओं की स्थिति को स्त्री की आत्मनिर्भरता से जोड़कर जहाँ आधुनिक समाज से जोड़ने की कोशिश की है वहीं उसके मन पर परंपराओं, रीति-रिवाज़ों और संस्कारों के प्रभाव को भी भली-भाँति दर्शाया गया है। विमली अपने निर्णय लेने में स्वतंत्र दिखती है। वह स्वयं स्वावलंबी और स्वाभिमानी दोनों रूपों में हमारे सामने आती है परंतु यह विमली न तो खुलेआम ससुर का विरोध कर पाती है और ना ही सामाजिक व्यवस्था का। इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि वह इस बात को भली-भाँति जानती थी कि उसके ससुर के ख़िलाफ़ बोलने पर शायद ही कोई उसका विश्वास करेगा। पंचायत में जाने पर उससे ऐसे-ऐसे सवाल किए जाएंगे कि वह स्वयं को सबके सामने निर्वस्त्र खड़ी पाएगी। बिना देखे, बिना जाने पूरा गाँव विमली को चरित्रहीन मान लेता है। ऐसे समाज में ना जाने कितनी ही स्त्रियां घर में ही अपनों के द्वारा छली जाती हैं। बाहर संस्कारों, परंपरा और इज़्ज़त की बात करने वाले मर्द कभी ससुर बनकर तो कभी जेठ बनकर तो कभी देवर बनकर तो कभी भाई बनकर स्त्रियों की अस्मिता छीनते आए हैं मनोतरिया की माई बोधन की विधवा भाभी के कुएँ में कूद कर मरने की बात भी उठाती है परंतु उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है क्योंकि वह उस पुरुषवादी व्यवस्था के विरोध में बोलती है जिसमें उसे बोलने का अधिकार नहीं है। पत्नी के सबके सामने बोल देने से ही पति कमजोर साबित हो जाता है क्योंकि उसकी पत्नी को उससे डर नहीं है। पत्नी को डराकर रखने में ही पुरुषों की शान है।- "मनतोरिया के बाप को इस बार सचमुच गुस्सा आ जाता है। इतने बड़े गाँव में वही सबसे कमजोर मर्द है जो उसी की जनाना भरी पंचायत में गचर-गचर बोले जा रही है? वह लपककर औरत का बाल पकड़ता है और घर-घर घसीटते हुए पंचायत से बाहर ले जाता है।"[5] इस अमानवीय कृत्य के लिए पति को कोई सजा नहीं दी जाएगी उल्टे इससे वह सम्मान पाएगा। यहाँ तक कि रज्जो भी ससुर के द्वारा तली हुई मछलियाँ ले जाने की बात को छिपा लेती है और विमली हार जाती है। विमली ने अपने बचाव में ज़्यादा कुछ नहीं कहा शायद व्यवस्था के प्रति यह उसका मूक विद्रोह था वह जानती थी कि पुरुषों की बनायी इस व्यवस्था में कोई उसकी बात नहीं सुनेगा। यह ऐसी सामंती व्यवस्था थी जिसमें आदमियों की मर्ज़ी का काम नहीं होने पर किसी भी तरह के षड्यंत्र रचकर स्त्री को सजा दी जा सकती है। हैरान करने वाली बात यह है कि यह काम बहुत मुश्किल नहीं था क्योंकि यह सोच सबके दिमाग़ में सदियों से बैठी है कि स्त्रियाँ बहुत जल्द चरित्रहीन हो जाती हैं, जिसे तिरियाचरित्तर कह कर रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त मान लिया गया है। "वह अपनी निरंकुश प्रवृत्तियों के कारण किसी व्यवस्था का अनुशासन नहीं मानता और सारा दोष स्त्री के सिर मढ़ देता है, क्योंकि जानता है कि औरत को दाग़दार मान लेना समाज की स्वाभाविक अन्यायकारी प्रक्रिया है।"[6]

विमली को ढूँढकर लाने का ज़िम्मा उन खलिहर बैठे लड़कों या पुरुषों के ज़िम्मे था जो कभी किसी स्त्री की इज़्ज़त नहीं करते और विमली के भाग जाने से उन सभी की इज़्ज़त पर बट्टा लग जाता है, तभी तो वे दौड़ कर उसे ढूंढ कर पकड़ लाते हैं। यही लोग पंचायत से भागने पर दिल्ली को उठा कर लाते हैं और वहाँ भी उस तड़पती स्त्री के शरीर की कोमलता, उसके गदराये बदन के स्पर्श को अपने भीतर उतार लेना चाहते हैं। जो विमली माँ से बहस करती है कि वह कोई गाय-भैंस नहीं है कि किसी के भी साथ बाँध दी जाए वही इस व्यवस्था में जानवरों की श्रेणी में लाकर खड़ी कर दी जाती है और सज़ा के रूप में उसे गर्म लाल करछुल से दाग़ दिया जाता है। जैसे जानवरों को दाग़ने की प्रथा प्रचलित थी, जो उन पर अपना अधिकार दर्शाती है। स्त्री घर में रहे या बाहर, मायके में रहे या ससुराल में उसका शोषण निश्चित है। हर कोई उस पर अपने मालिकाना

हक़ की मुहर लगा देना चाहता है। लेखक ने यहाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि के ऐसे समाज को दर्शाया है जहाँ स्त्री को हर हाल में पुरुष की सरपंची झेलनी पड़ती है। यदि वह उसकी किसी बात का विरोध करती है तो उसे दागा जा सकता है। यह वह चिह्न है जो उस पर किसी की संपत्ति होने का प्रमाण है। गाँव हो या शहर स्त्रियों के लिए शादी के बाद वैवाहिक प्रतीक चिह्न इस बात की मुहर लगाते हैं कि उसका मालिक कोई और है या वह किसी की संपत्ति है जबकि पुरुषों के लिए ऐसे कोई चिह्न समाज ने नहीं बनाए हैं।

विमली जानती है वह ग़लत नहीं है इसी से उसमें यह साहस आता है कि वह पूरी पंचायत के सामने निर्भीकता से पंचों की आँखों में आँखें डालते हुए अपनी बात रखती है और पंचों के फ़ैसले को मानने से इनकार कर देती है- ‘‘मुझे पंच का फैसला मंजूर नहीं। पंच अंधा है। पंच बहरा है। पंच में भगवान का ‘सत’ नहीं है। मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ- आ-क-थू...! देखूं कौन माई का लाल दगनी दागता है।[7] नारी के विद्रोह का ऐसा रूप कथा-साहित्य में विरले ही दिखता है। शायद इसी कारण यह कहानी हिंदी साहित्य में मील का एक पत्थर बनी है।

शायद यही एक स्त्री का दुस्साहस है जो गाँव के मर्दों को रास नहीं आता। एक औरत सबके सामने खड़ी होकर इतनी निडरता से बात करे यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है इसलिए उसके अनदेखे प्रेमी के साथ भाग जाने की बात को प्रमाणित किए बिना ही अफ़वाहों पर ध्यान देते हुए विमली को दोषी मान लिया जाता है क्योंकि उसने पूरे गाँव की नाक कटवाई है। यह वह समाज है जहाँ पुरुषों को इस तरह के कृत्य खुलेआम करने की आज़ादी है। न तो उनसे गाँव की इज़्ज़त ख़राब होती है और न ही उनके शरीर का कुछ बिगड़ता है। पुरुषों द्वारा किए गए ऐसे जघन्य अपराधों को भी सुनकर भी भुला दिया जाता है परंतु एक स्त्री के लिए यहाँ सब अपने बेगाने हो जाते हैं। विमली का पिता उसकी चिट्ठी पढ़कर आता ज़रूर है परंतु बीच रास्ते में ही अपनी बेटी के बारे में सुनकर उल्टे पाँव यह सोचकर लौट जाता है कि पंचायत में उसकी बदनामी होगी। वह बाप अपनी बेटी पर नहीं बल्कि उन लोगों की बात पर विश्वास करता है जिन्हें वह जानता तक नहीं है इसी कारण हमारे समाज में महिलाओं के द्वारा आत्महत्या जैसे मामले सामने आते हैं जिनकी तह तक जाना भी समझ ज़रूरी नहीं समझा जाता।

“पुजारी बताते हैं - वेदों में कई तरह की सजाएँ लिखी हैं। लाल मिर्च की बुकनी भरने की सजा। लछिमनजी ने तो इससे छोटी गलती पर नाक-कान दोनों काट लिये थे। अभी-अभी एक वेद वे हरिद्वार से लाए हैं। उसमें लिखा है- बालब्रह्मचारी की सेवा से भी 'परासचित' होता है।”[8] ऐसे वेदों की रचना हर युग में पुरुषों द्वारा रोज़ होती रहती है जिसमें उनके मन-मुताबिक सज़ा का प्रावधान होता है और सज़ा भी ऐसी कि स्त्री प्रायश्चित के नाम पर उनकी कामेच्छा की पूर्ति का साधन मात्र बनकर रह जाए। विमली की यह दुर्दशा भँवरीबाई की याद दिलाती है- ▯ भंवरीबाई दूर खड़ी अपनी बेवक़ूफ़ी पर ठहाका लगा रही है कि औरत होकर वह किस बलबूते पर मर्द के जन्मसिद्ध अधिकार से टकराई थी।▯[9]

विमली के साहस को यह समाज सहानुभूतिपूर्वक देखेगा, अभी इसमें गहरा संदेह है।

पंचायत में फैसला सुनाने वाले पंचों को देखकर भी यही लगता है कि पुरुषों का स्त्री पर पूर्ण अधिकार होगा, पुरुष की संपत्ति स्त्री के बारे में निर्णय लेने का अधिकार पुरुष का होगा, उसके किसी भी कार्य पर फ़ैसला सुनाने का अधिकार भी उसी का होगा। तब सच में न्याय कैसे होगा? इस समाज में महिलाओं का न तो आप अपनी देह पर अधिकार है और न ही अपने जीवन पर। उनका चरित्र तक अपना नहीं है, अपने बारे में फ़ैसला करना

तो दूर की बात है। ससुर के द्वारा उसे दाग़ने का कार्य सौंपा जाता है। विमली चीखकर बेहोश हो जाती है। ऐसे में पुजारी का यह कहना कि यही तिरियाचरित्तर होता है, उसे समझना कठिन है। यह है इस संकीर्ण और घृणित मानसिकता वाले खोखले समाज की सोच का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र।

वस्तुतः "तिरिया चरित्तर कहानी का जहाँ समापन बिंदु होता है, पाठक तिलमिला जाता है। व्यवस्था में आग लगाने का मन भी करता है। मानसिक विद्रोह कुछ ऐसे ही बिंदुओं पर लाकर छोड़ देता है। कभी नई कविता के पुरोधा डॉ. जगदीश गुप्त ने कहा था की 'रचना की सार्थकता' उसके 'रिझाने' में नहीं बल्कि 'सताने' में होती है, उसका ताल्लुक 'वाह' से अधिक 'आह' से होता है। 'तिरिया चरित्तर' का यह बिंदु कुछ ऐसा ही है। नारी-विमर्श के इस दौर में यह कथानक मौजू और आवश्यक है, क्योंकि अब बंद होना ही चाहिए सैद्धांतिक बकवासों का मिजाज और बेहूदी परंपराएं ।"[10]

तमाम वैज्ञानिक प्रगति करने के बाद महाशक्ति बनने का दम भरने वाला, आधुनिक होने का दावा करने वाला हमारा समाज आज भी ऐसी दकियानूसी, रूढ़िवादी, संकीर्ण सामंती सोच वाली मानसिकता से भरा पड़ा है जहाँ हर क्षेत्र में स्त्रियों पर अत्याचार होता आया है। घर हो या कार्यक्षेत्र या बाहर कहीं भी, स्त्रियों के साथ अमानवीय कृत्य होना रोज़मर्रा की तरह ही आम बात मान ली गई है। आवाज़ उठाने पर थाना या कोर्ट-कचहरी हर जगह प्रताड़ित स्त्री को ही किया जाता है, अपमान और ज़लालत उसे ही झेलनी पड़ती है, शक-संदेह उसी पर किया जाता है जैसे दोष उसी का हो। रामायण काल से ही स्त्री पर शक-संदेह करने की एक मज़बूत परंपरा रही है हमारे पास। विमली के साथ भी यही होता है।

यहाँ कामवासना से भरे ऐसे वहशी समाज का जुगुप्सा भरा चेहरा हमारे सामने आता है जो किसी क़ानून, कोर्ट-कचहरी, पुलिस-थाना आदि की परवाह नहीं करता। यहाँ औरतों की कोई इज़्ज़त नहीं होती। कामेच्छा से भरा दरिंदा पुरुष साम-दाम-दंड-भेद, किसी भी तरह स्त्री को अपने नीचे ही लाना चाहता है।

"समस्त संसार में स्त्रियाँ मनुष्य होने के बावजूद सबसे ज्यादा यातनाओं की जद में आने वाली प्राणी हैं। स्त्रियाँ जिन यातनाओं का शिकार पूरे संसार में होती हैं, उन यातनाओं की प्रकृति और चरित्र में एक वैश्विक एकरूपता है। अंतर है तो बस राष्ट्रीयता और धर्मों का।"11

संदर्भ-

1. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
2. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
3. खुली खिड़कियाँ, मैत्रेयी पुष्पा,सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली तीसरा संस्करण-पृष्ठ 85
4. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
5. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
6. खुली खिड़कियाँ, मैत्रेयी पुष्पा,सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली तीसरा संस्करण-पृष्ठ-70
7. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
8. https://www.hindisamay.com/content/853/1/शिवमूर्ति-कहानियाँ-तिरिया-चरित्तर
9. खुली खिड़कियाँ, मैत्रेयी पुष्पा, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली तीसरा संस्करण,पृष्ठ-252
10. मयंक खरे(सं.), मंच, जनवरी-मार्च 2011, मंच प्रकाशन, बांदा, पृष्ठ-26
11. ऋत्विक राय(सं.), लमही, अक्टूबर-दिसबर : 2012, श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, लखनऊ, पृष्ठ 40